जीवन का रचाव बसाव वाया कहानी

रश्मी देसाई

यदि सृजनशील औरत अपनी मानवीयता खो दे तो समाज का पूरा ढांचा ही ढ़ह जायेगा। लेकिन यह संतोषजनक बात है कि औरत में अभी भी मनुष्यता बची हुई है। हांलाकि स्त्री को लेकर अब पुरुषों की दृष्टि में बदलाव हो रहा है, जिसके परिणामस्वरूप आज समाज में नारी को सम्मान की दृष्टि से देखा जा रहा है, बराबर के स्तर पर माना जा रहा है साथ ही इससे एक प्रश्न भी खड़ा हो रहा है कि स्त्री को जो सम्मान बहुत पहले मिलना चाहिए था वह इतनी देरी से क्यों मिल रहा है? इसे विचारने की खास आवश्यकता है।

हिन्दी विभाग,
गोवा विश्वविद्यालय, गोवा

स्त्री विमर्श के इस दौर में एक अंजान मोड पर रुकनेवाली कथा से लेखिका रुबरु करवाती है। स्त्री विमर्श या नारी विमर्श के परिदृश्य की छाप "नीलिमा सिंह" की लेखनी में पूर्णतः दिखाई देती है। अनुभूति से अभिव्यक्ति की ओर बढ़ती लेखिका अपने आप की कहानी के माध्यम से व्यक्त करती है। कहानीकार जिस स्थिति से गुजरी है उन्हीं भावनाओं और संवेदनाओं को अपनी लेखनी के माध्यम से उन्होंने अभिव्यक्त किया है।

नीलिमा सिंह की कहानियाँ निजी अनुभूतियों से जुड़ी हुई हैं। प्रत्येक स्त्री जो लेखिका के मन में उतर गयी जो उनके जीवन का हिस्सा बनी, उसकी छाप इनकी कहानियों में दिखाई पड़ती है। स्त्री के बदलते रुप को इनकी कहानियों में देखा जा सकता है। समाज में अभी तक स्त्री को भोग्या के रुप में देखने की प्रवृत्ति रही है, किस तरह एक स्त्री वस्तु से ऊपर उठकर पैसे कमाने का साधन बन जाती है, इसकों भी लेखिका ने अपनी कहानियों मे भलीभाँति चित्रित किया है। पुरुषप्रधान समाज में नारी के परिवर्तित रुप को इस संग्रह में दिखाया गया है। जहाँ वह 'स्व'के लिए लड़ती दिखाई पड़ती है, तथा एक ओर घूंघट को सँवारती नारी दूसरी ओर हाथ में कलम लेकर समाज को बदलने के प्रयास में जुटी दिखती है। इसलिए कहना उचित होगा कि यह संग्रह स्त्री की संघर्षमय जीवन की गाथा है।

'मैने चाँद तारे नहीं माँगे थे' कहानी के शीर्षक से ही संघर्ष का स्वर सुनाई पडता है, कि एक औरत जो अपने 'स्व' के लिए संघर्ष करती है ।वह अपनी आजादी से ज्यादा कुछ नहीं माँगती, चाँद तारों का सीधा अर्थ उसकी निजी इच्छाओं,

आकाक्षाओं तथा खुशियों से लगाया जा सकता है। हर इन्सान को अपनी खुशियों को माँगने का या उनको भोगने का अधिकार होता है, ऐसे में औरतों को ही उन अधिकारों से क्यों वंचित किया जाता रहा है? परिवार में औरत की क्या गलती है? इस पर विचार करने की जरुरत है जबकि औरत से ही समाज का आधार बनता है। औरत के बिना समाज की कल्पना ही नहीं की जा सकती ।पुरुष सत्तात्मक समाज इस तथ्य को किसी भी रुप में स्वीकार नहीं करता। यदि सृजनशील औरत अपनी मानवीयता खो दे तो समाज का पूरा ढांचा ही ढ़ह जायेगा। लेकिन यह संतोषजनक बात है कि औरत में अभी भी मनुष्यता बची हुई है। हांलाकि स्त्री को लेकर अब पुरुषों की दृष्टि में बदलाव हो रहा है, जिसके परिणामस्वरुप आज समाज में नारी को सम्मान की दृष्टि से देखा जा रहा है,बराबर के स्तर पर माना जा रहा है साथ ही इससे एक प्रश्न भी खड़ा हो रहा है कि स्त्री को जो सम्मान बहुत पहले मिलना चाहिए था वह इतनी देरी से क्यों मिल रहा है? इसे विचारने की खास आवश्यकता है।

इस संकलन की प्रत्येक कहानी नारी के उसी मनोभाव को व्यक्त करती है जिसमें उसने बदलाव की भावना को महसूस किया तथा उसी प्रक्रिया में निरंतर चलती रही। वह केवल मूर्ति मात्र नहीं बनी रही अपितु उस मूर्ति की कीर्ति फैलाने का भी प्रयास किया।

एक स्त्री की व्याख्या की जाय तो वह सर्वमान्य यही हो सकती है कि जो अपनी इच्छाओं, आकांक्षाओं का गला घोटकर जीवन व्यतीत करती रहे। 'पायल' कहानी की शुभांगी भी कहीं न कहीं औरत के इसी दायित्व का निर्वाह करती है।प्यार करना सबका जैविक हक होता है, प्यार पर ही तो समाज निर्भर करता है। शुभांगी किसी और से शादी करने के बावजूद मन से देव की ही बनी रहती है। देव से तोहफे में मिले पायलों में उसका जीवन बसता है ।हर समय वह पायलों को पहने रहती है और इसी बात का सबूत देती है कि प्यार केवल एक बार, एक ही व्यक्ति से और एक ही अभिव्यक्ति के साथ किया जाता है। प्यार में देने की भावना होती है न कि लेने की। वह देव से स्वंय को कभीभी मुक्त नहीं कर पाती। जहाँ तक देव का सवाल है वह शुभांगी से प्यार करने के बावजूद घर की मर्यादा का निर्वाह करते हुए अपने प्रेम को ठुकरा देता है। प्रेम के बन्धन में बंधने के बाद जिस यातनाभरी स्थिति को शुभांगी भोगती है उसी को कहानी में दर्शाया गया है।

लेखिका की यह कहानी स्त्री- पुरुष के बदलते सम्बन्धों को दर्शाती है। इस कहानी में निश्छल प्रेम भावना के साथ ही प्यार में धोखा खाने की बात दोहराई गयी है। 'भ्रूण हत्या' कहानी में एक पिता द्वारा पुत्र के भविष्य को सँवारने के कार्य को 'हत्या' का नाम दिया गया है। इस कहानी का नायक गौतम बचपन से ही क्रान्तिकारी था। गौतम ने राजनीतिक वैशाखियों का सहारा न लेते हुए राजनीति में अपनी जगह बनाई। उसने लोगों के साथ अपना जुडाव इस तरह बनाया कि एक जगह से चुनाव जीतने के बाद दूसरी जगह से लोगों ने अपना नेता बनाया। दो-दो जगहों को एक साथ सँभालना संभव न होने की वजह से वह एक जगह छोड़ देता है। उस क्षेत्र से उसके पुत्र को टिकट देने का प्रस्ताव वहाँ के लोग करते हैं। पुत्र भी यही चाहता है। लेकिन गौतम अपने आदर्शवादी विचारों के चलते अपने पुत्र को टिकट नहीं देता। कहानी में इस घटना की तुलना 'भ्रूण हत्या' से की गयी है।

कहानी में जिस तथ्य की तरफ इशारा किया गया है, वह आज की मूल्य विहीन राजनीति की सच्चाई। गौतम जैसे पात्र के माध्यम से हम राजनीति में मूल्यों की कल्पना कर सकते हैं, साथ ही यह उम्मीद भी कि एक दिन ऐसा आयेगा, जब राजनीति में ऐसे सिध्दान्तवादी नेताओं की संख्या अधिकतम हो जायेगी तभी समाज में कोई बदलाव हो सकता है।

'शापित देव कन्या' कहानी मार्मिकता से परिपूर्ण है। घर के हालात की शिकार बनी शालिनी अपने माता-पिता के लिए एक ऐसे व्यक्ति से शादी करने का फैसला करती है जिसे सिर्फ उसकी सेवा करने वाली एक महिला की

जरूरत थी।वह एक ऐसे व्यक्तिसे शादी करती है जो मानसिक तथा शारीरिक रूप से विकलांग है। इसके बावजूद शालिनी को अपने निर्णय पर जरा भी दुख नहीं है। वह सोचती थी कि "अगर मुझे शादी करनी ही है तो क्यों न मैं ऐसे इन्सान से शादी करूँ जिसको मेरी जरूरत सबसे ज्यादा हो। मेरे माता-पिता भी अपना बुढापा शान्ति से गुजार सकें।"इस वक्तव्य से पता चल जाता है कि, किस प्रकार शालिनी ने अपने खुद के अरमानों का गला घोटकर एक असहाय व्यक्ति को जीवन दान दिया।

नारी के बदलते स्वरूप को 'दिपा बुआ 'कहानी में महसूस किया जा सकता है। नारी अपने सुखों का त्याग करके दूसरों को सुख प्रदान करती है। 'दिपा बुआ 'कहानी की दिपा बुआ लेखिका की इकलौती बुआ थी पर खुशी के सिवाय इनको दुःख झेलने का शौक सा लग गया था । शादी के छःमहीने बाद ही इनके पति का देहांत हो गया और वह वापस मायके आ गयीं। मायके में हरसमय स्वंय को व्यस्त रखा करती। जिंदगी भर दूसरों के सुख में सुखी होती रही, इतना खटने के बावजूद उन्हें कभी सुख नहीं मिला।दिपा बुआ ने पूरा जीवन मायके में बिताया पर अंतिम समय में उन्हें ससुराल जाकर रहना पड़ा। जिन मायके वालों के लिए वह अपने सुसराल की उपेक्षा करती रही, वही सुसराल उनके गाढ़े दिनों मे काम आया, जबकि मायके के लोगों में इतना भी जमीर नहीं बचा कि वह दिपा बुआ का आखिरी वक्त में साथ दे सके।

'क्षमा दान' कहानी की अनुराधा अपने पति देव के साथ बेहद खुशहाल जीवन बिता रही थी, पर जिस प्रकार चाँद पर ग्रहण लग जाता है, उसी प्रकार उसके जीवन में भी उसकी ननद का ग्रहण सा लग गया था। देव और अनुराधा के शादी शुदा जीवन में मनमुटाव हो जाता है जो आगे चलकर उनमें अलगाव की भावना को जागृत करता है। अनुराधा के दिल में अपने परिवार के प्रति बहुत आदर है, परिवार के कारण ही वह अपने काम से भी एक प्रकार की दूरी हरदम बनाए रखती है।घर तथा काम- काज दोनों को समान स्थान देते हुए भी वह अपने पति की नजरों मे स्थान तथा अहमियत प्राप्त नहीं कर सकीं। देव उसी पुरुष समाज का प्रतीक है जो पत्नी के अलग व्यक्तित्व को किसी भी रूप में स्वीकार नहीं पाता। इसी विडंबना को आज के समाज में भी बखूबी देखा जा सकता है।

इस कहानी संकलन की कहानी 'मैंने चाँद तारे नहीं माँगे थे' एक प्रतिनिधि कहानी है। लेखिका की माँ निर्मल ने अपनी पूरी जिंदगी बेटे-बेटियों के जीवन को सँवारने में लगा दी, परन्तु वही माँ जब बूढ़ी होती है तो उसे अपने ही बेटे अकेला छोड देते हैं। तीनों बेटे अपनी पत्नियों की साथ सुखी थे और पत्नियों के कहे अनुसार ही माँ को ही गुनहगार मानते हैं। इस कहानी को एक और कहानी 'यक्ष प्रश्न' से जोड़कर यदि पढ़ा जाए तो एक नवीन पाठ निर्मित हो सकता है। यक्ष प्रश्न कहानी में माँ अपने त्याग का बेटों से हिसाब करती है। कहानी माँ के अंर्तद्वंद को जिस धरातल पर अभिव्यक्त करती है वह असंवेदनशील होते जा रहे हमारे समाज की ऐसी सच्चाई है, जिस पर सोचने के लिए कहानी विवश कर देती है।'मैंने चाँद तारे नहीं माँगे थे' कहानी में माँ की विवशता है वहीं 'यक्ष प्रश्न' कहानी में माँ के द्वारा पूछे गये ऐसे सवाल हैं जिसका जवाब इस स्वार्थी समाज के बेटों के पास नहीं है। युधिष्ठिर ने यक्ष के प्रश्नों का जवाब भले ही 'महाभारत' में दे दिया हो परन्तु माँ के प्रश्नों का जवाब देने की हिम्मत आज के बेटों में नहीं है। माँ के प्रश्न सिर्फ बेटों से नहीं अपितु वह पूरे समाज से पूछे गये है जिस पर सोचनें की जरूरत है।

नीलिमा सिंह ने आस पास के जीवानुभवों को लेकर अपनी कहानियाँ बुनी है। इसिलिए इस संग्रह की कहानियों को पढ़ते हुए एक नये सच से रूबरू होते हैं और अपने आसपास के जीवन के बारे में सोचने को विवश होते हैं।